अंक
24
वसंत
2017

सफर

सफर मार्ग पर साथ–साथ

विषय – समुदायिक आपदाओं के लिये तैयारी

संपादकीय

आपदा अक्सर बिना किसी चेतावनी के आती है, तथा घरों, पशुओं, फसलों और मिट्टी को नष्ट कर देती है। सामाजिक रूप से वंचित लोग और गरीब आपदाओं के लिये सबसे कमज़ोर समूह होते हैं, जिनकी थोड़ी सी ही सम्पति आपदाओं द्वारा नष्ट हो जाती है, और उनके जीवन निर्वाह के लिये कोई साधन नहीं बचता। समुदायों में जब आपदा आती है तो नियोजित तैयारियां और राहत के उपाय आपदा द्वारा लोगों की भेद्यता को काफी हद तक कम कर सकते हैं

समुदाय आधारित आपदाओं की तैयारी, आपदा के प्रभाव को कम करने और आपदा के लिये तैयारी करने के लिये किये जाने वाले उपायों को संदर्भित करता है। समुदाय में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके जीवन, आजीविका, पशुओं, और सम्पति को बचाने की यह एक प्रतिक्रिया प्रणाली है। आपदा के समय, सरकार हर परिवार/समुदाय तक तुरन्त नहीं पहुंच सकती है; इसका मतलब है कि आपदा को कम करने के लिये, समुदायों को ही भली–भांति तैयार रहने की आवश्यकता है। ज़ोखिमों की बेहतर समझ की सुनिश्चितता, सभी कर्त्ताओं की भूमिका और जिम्मेदारी, और ज़ोखिमों को कम करने के लिये तकनीकी मार्गदर्शन द्वारा यह हासिल किया जाता है। बिखरे सामुदायिक जीवन की गतिविधियों को बनाये रखने के लिये भी समुदाय की भागीदारी महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और इसकी समकक्ष राज्य स्तर की एजेंसियों के माध्यम से भारतीय सरकार ने बहुपक्षीय एजेंसियों के साथ साझेदारी में कई पहलुओं को लागू किया है।

ई एच ए की ड़िजैस्टर एंड़ मिटिगेशन युनिट (डी एम एम यू–आपदा प्रबंधन और बचाव इकाई) एक प्रतिरोध क्षमतापूर्ण समुदाय बनाने की दिशा में राहत कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों के लिये काम करती है। आपदा के लिये प्रतिक्रिया, तैयारी, और जोखिम में कटौती उनके मुख्य उद्देश्यों में शामिल है।

सफर का यह संस्करण, हमारे समुदायों के लिये आपदा तैयारी के प्रति अधिक जानकारी प्रदान करने के लिये समुदाय आधारित आपदाओं के लिये तैयारियों पर क्रेंन्द्रित है।

इस संस्करण को पढ़ने का आनन्द लें !!

फेबा जेकब और कैरन मथ्यास

अन्दर क्या है...

संपादकीय 1
चॉको की चाय का आलेख 2
उपासना 3
सामुदायिक आपदा की तैयारी 4
सफलता की कहानी 7
साक्षात्कार 8
समुदाय आधारित तैयारी 11
एच.आर. गतिविधियाँ 12

समुदायिक स्वास्थ एवं विकास
(इम्मानुएल हॉस्पिटल एसोसिएशन)
द्वारा प्रकाशित

चाको का चाय स्तंभ

ग्रामीण और शहरी गरीब क्षेत्रों में, समुदायों के साथ काम करते हुये, किसी भी विकास एजेंसी को जिस चुनौती का सामना करना पड़ता है, वह है जागरूकता की कमी और समुदायों के कल्याण के लिये कार्य करने वाले अपर्याप्त समुदाय आधारित संस्थान। अज्ञानता और निरक्षरता के अतिरिक्त, जो मुद्दे तत्काल अहमियत नहीं रखते या जरूरी नहीं होते, उनके प्रति ''परवाह नहीं है'' जैसे रवैये का भी सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिये, अधिकतर समुदाय आग के खतरों को रोकने के लिये कोई सावधानी नहीं लेते, भले ही उनकी झोपड़ियां आग के करीब होती है और विस्फोटक की तरह होती हैं, वे बस कुछ अटल होने की प्रतीक्षा करते हैं। इसी प्रकार, उतरौला जैसे क्षेत्रों में, जो नदी के करीब है, बाढ़ के प्रति जागरूकता होने के बावजूद भी, लोग अपने घरों में बाढ़ को रोकने के लिये कोई सावधानी नहीं लेते। लोगों का बुनियादी रवैया ''जो होगा देखा जायेगा, हम कल की चिन्ता क्यों करें'' होता है, या इसे कर्मों पर आधारित एक सिद्धान्त समझा जाता है जिसके अनुसार यह माना जाता है कि हमें भगवान द्वारा पूर्व नियोजित घटनाओं में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये, क्योंकि ये घटनायें हमारे अतीत के कर्मों और भाग्य के आधार पर ही होती हैं।

गुजरात और अंदमान में चक्रवाती तूफान की आपदा से प्रभावित समुदायों की मदद करते समय, ई एच ए ने इन चुनौतियों का सीधा सामना किया। इसके लिये हमारी प्रतिक्रिया, पुर्नवास तथा भविष्य में होने वाली आपदाओं के लिये तैयारी के रूप में थी। आपदा के बाद, समुदाय स्वाभाविक रूप से तैयारी के लिये प्रशिक्षित होने के लिये अधिक तैयार होते है, क्योंकि वे आपदाओं के प्रभावों का अनुभव कर चुके होते हैं, और उन्हें रोकने या भविश्य में आने वाली आपदाओं के लिये तैयार रहने के लिये उत्सुक होते हैं। वे प्राथमिक चिकित्सा, स्कूलों जैसे संस्थानों को खाली करने के तरीकों, और अग्नि सुरक्षा के प्रशिक्षण का स्वागत करते हैं, और अनेक स्वयंसेवकों को आपदाओं के समय अनेक खतरों से निपटने के लिये आवश्यक कौशलों में प्रशिक्षित किया जाता है।

हमारी परियोजनाओं की सबसे बड़ी चुनौती, स्वयंसेवकों, स्कूलों के बच्चों, और जिन समुदायों में हम काम करते हैं, उसके पंचायत के सदस्यों को उस समय संवेदनशील (सुग्राही) बनाना और उन्हें प्रशिक्षित करना है, जब वे आपदा से प्रभावित नहीं होते। हमारी जो टीमें समुदायों का संघटन करने और उन्हें संवेदनशील बनाने के लिये अपने आप पर गर्व करती हैं, उन्हें जागरूकता पैदा करने के लिये काम करना चाहिये, और उन सारे समुदायों में जिनमें हम जाते हैं, ई एच ए की आपदा टीम के सदस्यों का और अधिक इस्तेमाल करते हुये, इन क्षेत्रों में हमारे कर्मचारियों को और समुदाय के स्वंयसेवकों को नियमित आधार पर प्रशिक्षित करने का कारण बनना चाहिये। संसार में प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों प्रकार की आपदाओं की आवृति की बढ़ौतरी को ध्यान में रखते हुये, यह एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य है ..... जैसा कि बैंजामिन फ्रेंकलिन ने कई वर्षों पहले अग्नि सुरक्षा के संदर्भ में कहा था, ''एक छोटी सी रोकथाम, बहुत बड़े इलाज के बराबर है।'' यह एक कहावत है जिसे ई एच ए सी एच की टीमों को अपनी स्वयं की तैयारी के लिये तथा उन समुदायों के लिये जिन में वे काम करते हैं, गम्भीरता से लेना चाहिये और इस पर काम करना चाहिये। मुझे विश्वास है कि सफर का यह अंक हमारे समुदायों में इस अक्सर उपेक्षित क्षेत्र से निपटने के लिये हमारी प्रेरणा को बढ़ायेगा, ताकि हम अपनी सोच और कार्यों में बदलाव ला सकते हैं, और समुदायों को एक साथ मिलकर उनकी भलाई के लिये काम करने के लिये एकजुट कर सकें।

डा. अशोक चॉको– *ड़ायरेक्टर, ई एच ए कम्यूनिटी हैल्थ एंड़ डिवैलपमैन्ट प्रोग्राम (निर्देशक, ई एच ए सामुदायिक स्वास्थ्य और विकास कार्यक्रम)*

उपासना

आपदा के लिये तैयारी

(रेव. प्रकाश जाजी)

आपदा अचानक होने वाली एक दर्घटना है, या यह एक प्राकृतिक विनाश है जो जीवन को बहुत नुकसान पहुंचाता है या नष्ट कर देता है। यह मनुश्यों के कारण भी हो सकता है। चक्रवात, तूफान, बाढ़, आंधी, सूखा, भूकम्प, और शत्रु द्वारा आक्रमण जैसी घटनायें, आपदा हैं। बाइबल में अनेक आपदाओं का वर्णन है, जैसे नूह के समय में जलप्रलय, यूसुफ के समय अकाल, और अनेक अन्य आपदायें जिनका सामना इस्राएलियों को करना पड़ा।

लैव्यव्यवस्था 26:1–3 में परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को आज्ञाकारिता के लिये आशीष और अवज्ञा के लिये दण्ड़ दिये जाने का वर्णन है। ये दण्ड़ मूल रूप से आपदायें ही थे। प्राकृतिक आपदायें परमेश्वर की विधि के अन्तर्गत होते हैं। हम आपदाओं को कैसे समझ सकते हैं? आपदायें राष्ट्रों पर किसी कारणवश आती हैं। 2 इतिहास 7:13–14 में लिखा है, ''यदि मैं आकाश को बन्द कर दूं कि वर्षा न हो, व टिड्डियों को उजाड़ने की आज्ञा दूं और अपने लोगों में महामारी भेजूं, और यदि मेरे लोग जो मेरे नाम के कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपने बुरे मार्गों से फिरे, तब मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को चंगा कर दूंगा।'' इन पदों में एक राष्ट्र पर आपदाओं के आने के बारे में लिखा गया है।

यिर्मयाह 14:12 में लोगों का न्याय करने के लिये आपदाओं का साधनों के रूप में उल्लेख किया गया है – ''जब वे उपवास करें तो मैं उनकी पुकार को नहीं सुनुंगा, और जब वे होमबलि और अन्नबलि चढ़ायें तो मैं उन्हें स्वीकार नहीं करूंगा; वरन मैं तलवार, अकाल और मरी से उनका अन्त कर दूंगा।''

आपदाओं के लिये बाइबल की प्रतिक्रिया क्या है ? बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर ने आपदाओं को राष्ट्रों को अनुशासित करने और उनका न्याय करने के लिये इस्तेमाल किया है, और करता है। 2 इतिहास 6:26–27 में इसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है – ''तेरे विरूद्ध उनके पाप के कारण जब आकाश बन्द हो जायें और वर्षा न हो, और तेरे दुख देने के कारण जब वे इस स्थान की ओर मुंह करके प्रार्थना करें और तेरा नाम लें और वे अपने पापों से फिरें, तब तू स्वर्ग में सुनकर अपने दासों और अपनी प्रजा इस्राएल के पाप क्षमा करना निश्चय तू उन्हें भला मार्ग सिखा जिस पर उन्हें चलना चाहिये। और अपने देश पर जिसे तू ने अपनी प्रजा को उतराधिकार में दिया है, वर्षा भेजना।'' ध्यान दें कि एक राष्ट्र के पापों के कारण सूखा आता है और परमेश्वर लोगों को सही मार्ग पर चलना सिखाने के लिये सूखे का प्रयोग करता है।

आपदाओं के लिये बाइबल की प्रतिक्रिया, परमेश्वर को लोगों के समान स्वीकार करना है। यहां यह बात प्रमुख है कि एक राष्ट्र को संबोधित किया जा रहा है, और अगर उस राष्ट्र के लोग पश्चाताप करते हैं तो, वह राष्ट्र चंगा हो जाता है। यहां जिस बात पर जोर दिया गया है वह राष्ट्रीय है, और एक राष्ट्र को निर्देशित करती है, राष्ट्र के लोगों को नहीं। योना के प्रचार करने के कारण निनवे देश ने पश्चाताप किया, और उस देश पर दया हुई। पूरे देश के उच्च स्तर से निम्न स्तर तक, सब लोगों ने सामूहिक रूप से पश्चाताप किया। यह एक सच्चा राष्ट्रीय पश्चाताप है। एक राष्ट्र को सामूहिक रूप से केवल प्रार्थना करने और परमेश्वर को प्राप्त करने की ही आवश्यकता नहीं है, वरन उसके लोगों को अपने पापों के लिये पश्चाताप करते रहने की भी आवश्यकता है।

सामूहिक रूप से पश्चाताप करने का परिणाम उस राष्ट्र की चंगाई होता है। और फिर हम शान्ति पूर्वक रहते हैं .... फिर मौसम बेहतर होगा और भूमि अधिक उपज देगी .... फिर हम कई तरह की आपदाओं से बच सकते हैं। और जब हम अपने देश के लोगों को राष्ट्रीय पश्चाताप करते देखेगें, तब हम अपने देश की राष्ट्रीय चंगाई देखेगें।

(Excerpts taken from
http://www.oneplace.com/ministries/watchman-radio-hour/read/articles/responding-to-disaster-2-chronicles-71314-13454.html)

सामुदायिक आपदा की तैयारी

(पेनिएल मलाकर, आपदा प्रबंधन और बचाव इकाई प्रमुख, ई एच ए)

संसार के प्राकृतिक आपदा के क्षेत्रों में एरिया एक संवेदनशील खतरनाक क्षेत्र के रूप में

हालांकि मनुष्यों ने जीवन के विभिन्न पहलुओं में तकनीकी विकास के सदर्भ में बहुत प्रगति कर ली है, फिर भी एक क्षेत्र ऐसा है जिसमें वे आगे नहीं बढ़ पाये हैं ..... और यह क्षेत्र है प्रकृति का वर्चस्व (प्रबलता)। प्रकृति ने हमेशा प्रमाणित किया है कि तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति और उपलब्धियों के बावजूद भी वह मनुश्यों से अधिक शक्तिशाली है। आज बाढ़, सुनामी, अकाल, चक्रवात, और भूकम्प के रूप में प्राकृतिक आपदायें मुख्यतः विश्वव्यापी तापमान वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) के कारण है।

विश्व बैंक और कॉलंबिया विश्वविद्यालय ने विश्वीय स्तर पर, ऐतिहासिक घटनाओं के आंकड़ों (डेटा) का उपयोग करके जीवन और आजीविका के लिये अपेक्षाकृत उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों को नियत करने के लिये दो या दो से अधिक खतरों से होने वाली उच्च मृत्यु दर के लिये 96 देशों की पहचान की है।

भूविज्ञान की दृष्टि से, एशियाई क्षेत्र प्रशांत और भारतीय महासागर में सक्रिय टैक्टोनिक (पृथ्वी की संरचना से सम्बन्धित) सतहों की गति द्वारा चिन्हित हैं, जो बड़े भूकम्प और सुनामी का स्रोत्र रहा है। प्रशांत और भारतीय महासागर नियमित रूप से उष्णकटिबंधीय चक्रवात और प्रचंड़ तूफान भी पैदा करते हैं। यह क्षेत्र नये पर्वत श्रृंखलाओं का आवास है, जो विशेष रूप से भूकम्प, भूस्खलन, अचानक आई बाढ़, हिमस्खलन, और बर्फीली नदी में आई बाढ़ से ग्रस्त हैं। मौसम और जलवायु प्रणाली मुख्य रूप से मानसून परिवर्तनशीलता और बर्फ की चादर की गतिशीलता द्वारा संचालित होते हैं, जो बाढ़ और सूखे दोनों की आवृत्ति और गंभीरता में योगदान देते हैं।

मैपलक्रॉफ्ट जोखिम प्रबंधन समूह द्वारा संकलित जलवायु परिवर्तन अतिसंवेदनशीलता सूचक के अनुसार जिन सात शहरों को ''अत्याधिक जोखिम'' वाले शहरों के रूप में वर्गीकृत किया गया है वे सभी एशिया में हैं – ढ़ाका, मनीला, बैंकाक, यांगून, जकार्ता, हो ची मिन्ह और कोलकाता।

भारतीय दृष्टिकोण

भारत में प्राकृतिक आपदाओं के बारे में हमने बार बार पढ़ा और देखा है, जिनसे बड़ी तबाही हुई, जिनमें हजारों लोग मारे

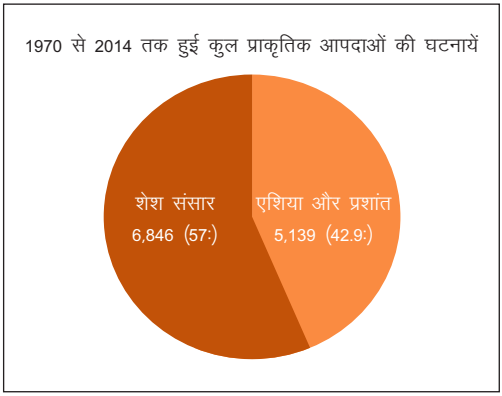

गये, और जिसके कारण जीवन तथा सम्पति नष्ट हुई। 2015 में चेन्नई में आई बाढ़, 2014 में कश्मीर की बाढ़, 2013 में उत्तराखंड़ और हिमाचल में अचानक आई बाढ़, 2012 में असम में आई बाढ़ और बोड़ोलैंड़ में हुई लड़ाई, 2011 में सिक्किम के भूकम्प, 2010 में लेह में बादल का फटना और बाढ़, 2009 में दक्षिणी बंगाल में आहलिया नामक चक्रवात, 2009 में आंध्र की बाढ़, 2007 तथा 2008 में बिहार में आई बाढ़, 2005 में कशमीर के भूकम्प, 2004 में हिंद महासागर की

सुनामी, 1999 में ओड़िशा में आया बहुत बड़ा चक्रवात, 1993 में लाटूर में भूकम्प, 1876 से 1878 के बीच अक्षिण भारत का महान अकाल, 1839 में आंध्र प्रदेश में हुये कोरिंगा चक्रवात, 1737 में कोलकाता में चक्रवात, 1970 और 1943 में बंगाल में पड़ा अकाल को हम अभी तक नहीं भूल पायें हैं। भारत में हुये अनेक युद्धों, आंतरिक संघर्षों, और महामारियों को भी हम नहीं भूल सकते हैं जिसमें लाखों लोगों की जानें गई और अरबों की सम्पति बरबाद हुई।

समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन पद्धति

एक ग्रमीण संदर्भ में, किसी भी समुदाय में आपदा की घटनाओं के लिये पहली प्रतिक्रिया उसके लोगों की ही होती है। इसलिये, समुदाय को उसकी क्षमता और दृढ़ता (तत्परता से बहाल होने की शक्ति) को बनाने के लिये सक्रिय रूप से

Photo- DMMU team

शामिल करना बहुत महत्वपूर्ण है। समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन (सी बी डी एम), आपदा के संभावित खतरों को कम करने के द्वारा एक समुदाय को आपदा की स्थिति का सामना करने और आपदा के लिये दृढ़ता को बनाने के लिये तैयार करने में मदद करने की एक पद्धति है।

समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन (सी बी डी एम), समुदायों की संवेदनशीलता को कम करने और आपदा से निपटने की क्षमता को बढ़ाने; जीवन, सम्पति, पर्यावरण, की हानि को कम करने; और बहाली को तेज करने के लिये बड़े पैमाने पर बीच–बचाव, उपायों, गतिविधियों, और कार्यक्रमों को शामिल करता है। समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन (सी बी डी एम) की पद्धति संवेदनशील समाजों को आपदा के लिये दृढ़ समाजों में बदलने में मदद करती है, जो प्राकृतिक और सामाजिक–आर्थिक राजनीतिक पर्यावरण के तनावों और सदमों को सहन कर सकते हैं और बहाल हो सकते हैं।

सुरक्षा, रोज़गार (आजीविका) सुरक्षा, और लंबे समय तक चलने वाले आर्थिक–सामाजिक और भौतिक विकास, अर्थात्, सामान्य कल्याण, स्वास्थ्य, सुविधायें, प्राकृतिक और भौतिक पर्यावरण आदि समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन (सी बी डी एम) के प्रमुख संकेतक हैं। प्रतिक्रियाशील आपातकालीन प्रबंधन से आपदा के खतरों में कमी (डी आर आर) तक, प्रतिमानों के विस्थापन के साथ, सक्रिय आपदा–पूर्व बीच–बचावों पर अधिक जोर दिया गया है, जिन्हें आमतौर पर रोकथाम, राहत, और तैयारी के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। हालांकि, प्रकृतिक खतरों को रोका नहीं जा सकता, पर मानव–प्रेरित खतरों को जो उद्योगों/दुर्घटनाओं, तकनीकी विफलताओं, प्रदूषण, और नागरिक संघर्षों से जुड़ें हैं, रोका जा सकता है। इस रोकथाम में आपदाओं से स्थायी संरक्षण प्रदान करने या किसी खतरनाक घटना की तीव्रता/आवृत्ति को कम करने के उपाय शामिल हैं, ताकि वह एक आपदा न बन जाये। इनमें सुरक्षा, गरीबी उन्मूलन, और संपति पुनवितरण, बुनियादी आवश्यकताओं का प्रावधान तथा शिक्षा एवम् निवारक स्वास्थ्य योजनायें शामिल हैं।

यह सुनिश्चित करने के लिये कि आपातकाल के दौरान उचित और प्रभावी कार्रवाई की जाये, आपदा की तैयारियों में, आपदा की प्रत्याशा में लिये गये उपाय शामिल हैं, जैसे, प्रारंभिक चेतावनी देने के लिये एक प्रणाली की स्थापना करना, समन्वय और संस्थागत व्यवस्थायें, निकासी और आपातकालीन संचालन प्रबंधन, जन जागरुकता, आपदा और निकासी अभ्यास, और माल एकत्र करना। आपातकालीन प्रतिक्रियायें जीवित रहने और हालात को और अधिक खराब होने से बचाने को सुनिश्चित करने के लिये

Photo- DMMU team

प्रयोग किये जाने वाले उपाय हैं। इनमें खोज और बचाव, महत्वपूर्ण सुविधाओं और उपयोगी सेवाओं तत्काल मरम्मत और बहाली, क्षतिग्रस्त आवश्यकताओं तथा क्षमता मूल्यांकन का संचालन, खाद्य और अखाद्य राहत सहायता, चिकित्सीय सहायता, निकासी केंद्र प्रबंधन और नेटवर्किंग शामिल है। बहाली में केवल स्थिति को आपदा से पहले वाले स्तर पर वापस लाना ही नहीं होता, परन्तु पुर्नवास और पुनर्निमाण भी शामिल हैं, जिसे और राहत तथा संवेदनशीलता में कमी के ढ़ांचे के रूप में किया जा सकता है।

''विकास एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा लोग अपनी आवश्यकता के लिये चीजों को पैदा करने की और अपनी इच्छा अनुसार अपने राजनैतिक और सामाजिक जीवन के प्रबंधन के लिये अपनी क्षमताओं को बढ़ाते हैं, और इसके साथ ही, उन घटनाओं के लिये जो उनके आर्थिक और सामाजिक–राजनैतिक अस्तित्व के लिये खतरा हैं, अपनी तत्काल तथा दीर्घकालिक कमजोरियों (विशेषकर आपदा प्रवृत्त क्षेत्रों में) को कम करते हैं''– (एंडरसन और वुडरो)। विकास का

यह दृष्टिकोण, संक्षेप में आपदा में राहत और जोखिम की कमी में भागीदारी में स्थानीय और सामुदायिक आकांक्षाओं को वयक्त करता है।

समुदाय आपदा की तैयारियों के दौरान लागू होने वाली सी बी ड़ी एम की बुनियादी विशेषतायें ये हैं .....

- **लोगों की भागीदारीः** सामुदायिक सदस्य मुख्यकर्ता और संचालक हैं; आपदा जोखिम में कमी और विकास के लाभों में वे प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा लेते हैं।
- **सबसे कमजोर समूहों, परिवारों, और सामुदायिक लोगों के लिये प्राथमिकताः** शहरी क्षेत्रों में, शहरी गरीब और अनाधिकारिक क्षेत्र आमतौर से कमजोर क्षेत्र होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में गुज़र–बसर करने वाले किसान, मछवारे, और स्वदेशी लोग होते हैं। बुजुर्ग, विकलांग, बच्चे, और औरतें भी कमजोर होती हैं।
- **जोखिम कम करने के उपाय समुदाय विशिष्ट हैंः** ये उपाय समुदाय के जोखिमों, जैसे संकट, संवेदनशीलता और क्षमतायें, आपदा के जोखिम की अनुभूति के विश्लेशण के बाद पहचाने जाते हैं।
- **मौजूदा क्षमताओं और मुकाबला करने की क्रियाविधियां मान्यता प्राप्त हैंः** संवेदनशीलता को कम करने के उद्देश्य से मौजूदा क्षमताओं को बनाने और मजबूत करने के लिये, और मुकाबला करने की क्रियाविधियों का स्तर बढ़ाने के लिये, एक आपदा प्रतिरोध क्षमतापूर्ण समुदाय बनाना लक्ष्य है।
- **आपदा जोखिम में कमी को विकास के साथ जोड़ता हैः** यह संवेदनशील परीस्थितियों और कमजोरियों के कारणों को संबोधित करता है।
- **बाहरी लोगों की भूमिका सहायता करने वाली और सुगम बनाने वाली हैः** सी बी एम डी के कार्यक्रमों और गतिविधियों के सिद्धान्त ऊपर दिये गये तत्वों और विशेषताओं से लगभग मिलते जुलते हैं। डी आर आर की गतिविधियों पर नज़र रखने का यह एक सम्पूर्ण मापदण्ड/सूचक भी है।
- **भागीदारी प्रक्रिया और सामग्रीः** जोखिम आंकलन की पूरी प्रक्रिया में समुदाय के सदस्यों की भागीदारी, विशेषकर सबसे अधिक कमज़ोर वर्गों और समूहों की तैयारी और राहत के उपायों की पहचान, निर्णय लेना तथा लागू करना हैं। जोखिम कम करने और विकास प्रक्रिया से समुदाय को सीधा लाभ होता है।
- **प्रतिक्रियाशीलः** समुदाय के अनुभव किये गये और महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के आधार पर; समुदाय की अनुभूति और आपदा के जोखिमों और उनकी कमी के उपायों की प्राथमिकता का ध्यान रखता है, ताकि समुदाय स्वामित्व का सामना कर सके।
- **एकीकृत :** समुदाय की आवश्यकता के अनुसार, आपदा से पहले और बाद उपायों की योजनायें बनाई और लागू की जाती हैं; एक समुदाय का दूसरे समुदायों, संगठनों, तथा सरकारी युनिटों/एजेंसियों से विभिन्न स्तरों पर संबंध होता है, विशेषकर उन कमजोरियों के लिये जिन्हें समुदाय अपने आप से संबोधित नहीं कर सकता।
- **अग्रसक्रियताः** आपदा से पहले रोकथाम, राहत, और तैयारियों पर ज़ोर देना।
- **विस्तृतः** संरचनात्मक (कठोर, भौतिक) और गैर संरचनात्मक (कोमल, स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, संगठन, समर्थन, आदि) राहत के उपाय किये जाते हैं – कमजोरियों को दूर करने के लिये लघु, मध्यम, और दीर्घकालिक उपाय किये जाते हैं।
- **बहुक्षेत्रीय और बहु अनुशासिक :** समुदाय में सभी हितधारकों (हिस्सेदारों) की भूमिकाओं और भागीदारी का ध्यान रखता है; स्वदेशी/स्थानीय ज्ञान और संसाधनों को विज्ञान और तकनीकी तथा बाहरी लोगों के समर्थन से जोड़ता है; सबसे अधिक कमज़ोर क्षेत्रों और वर्गों की बुनियादी हितों का समर्थन करते हुये विभिन्न हितधारकों (हिस्सेदारों) के मामलों कां संबोधित करता है।
- **सशक्तिकरणः** लोगों के विकल्पों और क्षमताओं में वृद्धि; संयुक्त कार्यों द्वारा संसाधनों और मूल सामाजिक सेवाओं तक अधिक पहुंच और उनका नियंत्रण; निर्णय लेने में अधिक सार्थक भागीदारी जो लोगों के जीवन को प्रभावित करता है; भौतिक और प्राकृतिक वातावरण पर अधिक नियन्त्रण; आपदा राहत और जोखिम की कमी में भागीदारी, विकास के अन्य प्रयासों में भागीदारी करने में समुदाय के सदस्यों का आत्म–विश्वास बढ़ाती है।
- **विकास संबंधितः** समाज में मौजूद कमज़ोरियों की प्रक्रिया और हालातों, कारकों के जटिल संबंधों को संबोधित करने और कम करने में योगदान।

निष्कर्ष

सी बी ड़ी एम के दृष्टिकोण, आपदा प्रबंधन रणनीति और आपदा की संवेदनशीलता में कमी करने के बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व हैं। वे एक नीति प्रचलन के साथ जुड़े हैं, जो स्थानीय लोगों के ज्ञान और क्षमता को महत्व देती है, और सामाजिक पूंजी सहित स्थानीय संसाधनों पर आधारित है। सी बी ड़ी एम न केवल आपदा का स्थानीय स्तर पर सामना करने और अनुकूलन रणनीति तैयार करने में ही सहायक है, वरन, उन्हें एक व्यापक विकास योजना में रखने में भी सहायक है। सैद्धान्तिक रूप से, स्थानीय लोगों को असुरक्षित प्रकार के विकास या आजीविका प्रथाओं का विरोध करने के लिये, तथा राजनीतिक प्रतिनिधियों के साथ स्थानीय सरोकार को अधिक प्रभावी ढ़ंग से बढ़ाने के लिये संगठित किया जा सकता है।

संसार भर में होने वाली आपदा घटनाओं की बढ़ती आवृति और इससे संबंधित राहत और क्षतिपूर्ति की लागत के साथ, स्थानीय समुदाय को साथ लेकर आपदा तैयारियों के लिये सक्रिय होकर काम करना ही समझदारी है।

सफलता की कहानियां

विमल की चालौती में आपदा प्रबंधन समिति

(सुश्री पेरीन क्रिस्टोफर, प्रोजेक्ट अधिकारी, एल सी एच, मसूरी)

2013 में, विमल का चालौती का एक गांव आपदा से प्रभावित हुआ था। इसमें घरों को नुकसान पहुंचा था, सड़कें नष्ट हो गईं थीं, जिससे बच्चे स्कूल जाने में और गांव वाले अपने रोज के कामों पर जाने में असमर्थ थे। सी एच पी ड़ी टीम ने उस गांव में जाने का फैसला किया, और वहां जाकर बैठकों का आयोजन किया, जिनमें गांव वालों ने अपनी कठिनाइयों और समस्याओं को हमारे साथ बांटा। सी एच पी ड़ी टीम ने उन्हें एक वी डी एम सी (गांव आपदा प्रबंधन समिति) बनाने की सलाह दी क्योंकि यह एक आपदा प्रवृत्त गांव था। समुदाय इस बात के लिये राजी हो गया, और 2016 में वी डी एम सी (गांव आपदा प्रबंधन समिति) का निर्माण हुआ। इस वी डी एम सी (गांव आपदा प्रबंधन समिति) को, आपदा राहत प्रबंधन और उसकी तैयारियां से संबंधित, पूरे साल, गावं और ब्लॉक स्तर पर विभिन्न विषयों में प्रशिक्षित किया गया है। इनके पास कार्य–दल हैं, जो गावं और ब्लॉक स्तर पर नकली ड्रिल का अभ्यास करते हैं। वी डी एम सी स्थानीय पुलिस और जिला स्तर के आपदा प्रबंधन कार्य दल के साथ सम्पर्क में हैं। समूह के निर्माण के बाद, समूह को सरकारी विभाग (मनरेगा) से सम्पर्क करने का अधिकार दिया गया है। समूह ने मछली पालन के लिये अपने तालाब को फिर से बनाने के लिये आवेदन प्रस्तुत किया जो आपदा में नष्ट हो गया था। उनके अनुरोध को मंजूरी दी गई थी, और तालाब के पुनर्निर्माण के लिये 15 लाख की धन राशि मंजूर की गई।

उम्मीद प्रौजेक्ट

16 से 18 जून 2013 में उत्तराखंड़ भारी बारिश और बाढ़ से प्रभावित हुआ था। इसके परिणाम स्वरूप, भूमि और जानवर नश्ट हुये, सड़के बन्द हो गईं, फसल और अनाज को नुकसान पहुंचा, और बाढ़ का पानी घरों में घुस गया। लोगों को बहुत निराशा हुई और कई लागों ने दूसरे स्थानों में जाकर बसने का फैसला किया। एल सी एच ने 3500 परिवारों को राहत प्रदान की, जिसमें राशन, एक सोलर लाइट, एक रेड़ियो, कपड़े, सैनीटरी पैड्स, भोजन पकाने के लिये एक सोलर पैनल, तिरपाल, सिलाई मशीन, और ऊन शामिल थे। उनकी आजीविका को सशक्त बनाने के लिये एक अन्य संगठन के साथ मिलकर उन्हें बकरियां दी गईं। राहत का यह काम छः महीनों तक चलता रहा।

उम्मीद प्रौजेक्ट का पहला चरण

2013 के अन्त में उम्मीद प्रौजेक्ट ने अपने कार्य के बारे में ब्यौरा दिया

मुख्य कार्य –

- समुदाय को संगठित करना
- प्रवसन को रोकने के लिये तत्काल कार्रवाई करना
- डी आर आर को मुख्य–धारा में लाने के लिये समुदाय को सक्षम और सशक्त बनाना
- समुदाय प्रबंधित डी आर आर के कार्यकारी मॉड़ल का प्रदर्शन करना, और फिर से दोहराने के लिये सरकार के साथ अपने पक्ष में जनमत तैयार करना
- भू–क्षरण (मिट्टी का कटाव), भूति की गिरावट को रोकना और बारिश के पानी का संरक्षण करना (समुदाय आधारित जल विभाजन प्रबंधन)
- आजीविका की बहाली
- काम के लिये नकद भुगतान
- विकलांगता समावेशी आपदा जोखिम में कमी
- जलवायु परिवर्तन अनुकूलनशीलता और जल विभाजन प्रबंधन के माध्यम से समुदाय को प्रतिरोधक्षमता पूर्ण बनाना
- अस्थायी आश्रय प्रदान करन

प्रगति और पूरे किये गये कार्य

1. भूमि को फिर से उपयोगी बनाया
2. आजीविका का सशक्तिकरण किया
3. जो लोग नदी की तरफ अपनी भूमि खो चुके थे उनके लिये ऊंचाई वाली बंजर भूमि को फिर से प्राप्त किया गया
4. सिंचाई प्रणाली को स्थापित किया
5. नई तकनीकों की शुरूआत, और फसल विविधीकरण पर किसानों को प्रशिक्षित किया गया
6. बीज वितरण किया गया
7. रसोई बागवानी की प्रणाली आरम्भ की गई
8. जलवायु परिवर्तन के लिये, तथा भू–क्षरण (मिट्टी का कटाव) और भूस्खलन को रोकने के लिये वृक्षारोपण किया गया
9. चारे के लिये संसाधनों में वृद्धि
10. आपदा तैयारियों पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया
11. प्रारंभिक चेतावनियों के लिये रेड़ियो, और प्राथमिक चिकित्सा दी गई
12. चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया
13. स्कूलों में सुरक्षित पीने के पानी के लिये फिल्टर दिये गये
14. वी डी एम सी (गांव आपदा प्रबंधन समिति) बनाई गई और आपदा के प्रभावों को कम करने के लिये प्रशिक्षण दिया गया।

साक्षात्कार

ड़ॉ. हैन्ना हैजाजी, प्रोग्राम मैनेजर, कपैसिटी एण्ड़ नॉलिज मैनेजमैन्ट (क्षमता और ज्ञान प्रबंधन) स्फीयर इंड़िया, दिल्ली का एक टेलीफोन साक्षात्कार

(फ़ैबा जेकब, सम्पादक, सफर द्वारा)

सफर – *क्या आप अपनी संस्था स्फीयर इंड़िया के बारे में हमें कुछ बता सकती हैं ?*

ड़ॉ. हैन्ना – हां, स्फीयर इंड़िया भारत में मानवतावादी एजेंसियों का एक राष्ट्रीय गठबंधन है। इसके सदस्यों में भारतीय सरकार की प्रमुख एजेंसियां, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियां, आइ एन जी ओस, एन जी ओस नेटवर्क और राष्ट्रीय एन जी ओस शामिल हैं। स्फीयर इंड़िया एजेंसियों के बीच समन्वय, प्रशिक्षण और क्षमता के निर्माण, सहयोगपूर्ण समर्थन, और गुणवत्ता तथा जवाबदेही के लिये सहयोगी प्रक्रिया के माध्यम से सूचना ज्ञान और सीखने के प्रबंधन को बढ़ाता है।

सफर – *आपदा तैयारियों के लिये समुदायों पर ध्यान देना महत्वपूर्ण क्यों है ?*

ड़ॉ. हैन्ना – देखिये, जब भी कोई आपदा आती है, समुदाय ही सबसे अधिक प्रभावित होते हैं और वे ही उत्तरदाता होते हैं। आपदा की गंभीरता और प्रकृति के बावजूद, जीवन को बचाने के लिये सबसे पहले प्रतिक्रिया समुदाय से ही आती है। इस प्रकार आपदा की प्रारंभिक तैयारियों में समुदाय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि वे आपदा प्रतिक्रिया का केंद्र हैं, और आपदा का सामना करने के लिये प्रभावित लोगों के मौजूदा संसाधनों का उपयोग करते हुये उनकी क्षमता का प्रबंधन कर सकते हैं। सभी प्रतिक्रिया प्रणालियों का केंद्र होने के नाते, समुदायों को आपदा के लिये तैयार करना बहुत जरूरी है।

सफर – *आपदा तैयारियों में आपकी संस्था द्वारा लिये गये प्रमुख कदम (कार्यवाई) क्या है ?*

ड़ॉ. हैन्ना –

1. जॉइंट रैपिड़ नीड़स नामक साधन से नीतियों को आयोजित करना – यह एक साधन है जिसके द्वारा आपदा के समय, विभिन्न कार्यकर्ताओं और कई हितधारकों के द्वारा एक प्रारंभिक रैपिड़ असैस्मेन्ट (तात्कालिक या तीव्र आकलन) किया जाता है। आपदा के बाद इस आकलन को संचालित करने में, राज्य आई ए जीस और स्थानीय सामुदायिक नेटवर्क को बेहतर तरीके से तैयार करने के लिये हर साल हम विभिन्न राज्यों में इन प्रशिक्षणों को आगे बढ़ाते हैं।
2. आपदा तैयारी प्रबंधन योजनाओं का विकास करना – राज्य/जिला प्रबंधन योजनाओं के विकास में एस डी एम ए की सहायता करना। स्फीयर इंड़िया ने मधुबनी में प्रथम डी डी एम पी आरम्भ किया जिसे एजेंसियों के सदस्यों और सरकार द्वारा प्रारंभिक संदर्भ मानक (बैंच मार्क) के रूप में मान्यता दी गई थी, और बाद में इसे अन्य राज्यों में भी दोहराया गया। स्फीयर इंड़िया ने सिक्किम के लिये एक राज्य आपदा प्रबंधन योजना, आसाम (मजूली) के लिये क्षेत्रीय योजना, और जम्मू कश्मीर के लिये जिला आपदा प्रबंधन योजनाओं के विकास में तकनीकी सहायता भी प्रदान करी है।

स्फीयर इंड़िया ने जिला आपदा प्रबंधन योजना के रूप में, मेघालय, मिजोरम, और मणिपुर सरकारों की मदद से स्वास्थ्य तैयारी योजनाओं को मजबूत करने की प्रक्रिया को आसान बनाया है। इस समय संबंधित राज्य, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, और विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि की तकनीकी मदद और इनपुट से इन योजनाओं को विकसित करने में लगे हुये हैं। ये योजनायें स्वास्थ्य में 19 स्फीयर न्यूनतम मानकों को एकीकृत करती है।

3. प्रशिक्षण – राष्ट्रीय और राज्य स्तरों पर विभिन्न विशयों में क्षमता निर्माण प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है, जिसमें स्फीयर न्यूनतम मानक तथा मानवतावादी संविधान, डी आर आर, एच वी आर सी विश्लेषण, स्वास्थ्य, वाश, आपदाओं में विकलांगता को मुख्य पक्ष देना, एस आर एच, और आपदाओं के बाद मनोसामाजिक सेवायें प्रदान करना, डी आर आर में कमजोरों को शामिल करना, गूगल अर्थ मैपिंग (धरती मानचित्रण) शामिल हैं।

4. स्फीयर इंड़िया साऊथ एशिया टुगैदर फॉर ह्युमैनिटैरियन इमपैरिटिव (साथी) का भी एक हिस्सा है, जो मानवतावादी कार्रवाई में सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने के लिये दक्षिण एशियाई देशों के संबंधित हितधारकों के प्रभावशाली सहयोग के लिये स्थापित किया गया एक नैटवर्क है। इनमें अफगानिस्तान की अफगान राहत और विकास के लिये एजेंसी कोऑर्डिनेटिंग बाड़ी, स्फीयर बांगलादेश, स्फीयर इंड़िया, आपदा तैयारी नैटवर्क (डी पी नैट–नेपाल), पाकिस्तान मानवाधिकार फोरम (मंच), और श्रीलंका से मानवीय एजेंसियों का संघ शामिल हैं। ज्ञान और क्षेत्रीय अनुभव को बांटने के लिये यह एक अच्छा मंच है, और यह पहलकदमी इस नेटवर्क के द्वारा बहुत बड़े पैमाने पर दर्शकों तक पहुंचता है।

सफर – *क्या आप हमें विस्तार से बता सकती हैं कि इन पहलकदमियों से स्फीयर इंड़िया ने कौन सी सफल कूटनीतियों को अपनाया है?*

ड़ॉ. हैन्ना – स्फीयर इंड़िया में हम लोग परामर्श और सहयोगी साझेदारी के निर्माण में विश्वास करते हैं। स्फीयर इंड़िया तालमेल का एक मंच और नैटवर्क है।

स्फीयर इंड़िया ने 2016–2020 के लिये एक कूटनीति विकसित करी है। यह कूटनीतिज्ञ योजना व्यापक परामर्श प्रक्रिया का परिणाम है। इसमें पिछली शिक्षा (ज्ञान) की समीक्षा और वार्षिक शैक्षिक घटनायें, कार्यकारी समिति द्वारा नियुक्त एक समिति द्वारा कार्यक्रम प्राथमिकताओं का पुनर्गठन, एस डब्लयु ओ टी और एक कूटनीति योजना अभ्यास, कार्यक्रम और कूटनीति समिति की प्रस्तुतियां, सदस्य संगठनों के सी ई ओस के साथ परामर्श, मुख्य हितधारकों के परामर्श, सदस्यों के इनपुट, और प्राथमिकताओं का पुनर्गठन शामिल थे। भारत में बदलते हालातों के साथ संरेखित करना और नई वैश्विक रूपरेखाओं और योजनाओं से निकलने वाली प्राथमिकतायें भी इसमें शामिल थीं।

2016–2020 की कूटनीति, प्रभावित आबादी के प्रति उत्तरदायित्व को बढ़ाने के लिये, डी आर आर की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुये मानवीय पद्धतियों को विकसित या सशक्त करने के द्वारा, मानवीय और डी आर आर के प्रभावशाली और योग्य समन्वय, पूर्वानुमानित मानवीय वित्त, उचित नीति, ज्ञान, और क्षमता के विकास के लिये, स्फीयर इंड़िया की विविधता, उपस्थिति और दर्जे का उपयोग करने के लिये प्रयास करती है।

सफर – *आपदा तैयारी योजना महत्वपूर्ण क्यों है? एक आपदा तैयारी योजना कैसे बनाई जाती है ?*

ड़ॉ. हैन्ना – कम समय में आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिये और अनदेखी आपदाओं और दुर्घटनाओं के लिये बेहतर तैयारी के लिये इस योजना का बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। यह आपदा से पहले, आपदा के दौरान और आपदा के बाद, प्रभावशाली प्रतिक्रिया प्रदान करने में मदद करती है; और आपदा के समय हमें अपने अपने काम और जिम्मेदारियों को सफाई से बताती है। इससे हमें विभिन्न लाइन विभागों के लिये एस ओ पी अर्थात् मानक संचालन प्रक्रिया (स्टैन्डर्ड ऑपेरेटिंग प्रोसीज़र) बनाने और आकार देने में मदद मिलती है – जैसे, शिक्षा क्या करेगी, पी एच एस क्या करेगी, स्वास्थ्य क्या करेगा, अस्पताल क्या करेगें, आदि। यह योजना, जोखिम संवेदनशीलता क्षमता विश्लेषण करने में भी हमारी मदद करती है, उदाहरण के लिये ... क्या उस जगह हमारे पास अस्पताल हैं, स्कूल कहां हैं, वितरण की जगह कहां है। अगर हमारे पास पहले से ही इस तरह की संरचना (ढ़ांचा), आकलन, और विश्लेषण होगा, तो आपदा के दौरान यह सहायक हो सकता है। यह सब कुछ आपदा से पहले किया जा सकता है, पर इसके लिये बहुत गहराई से काम करने, परामर्श, और संबंधित विभागों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार लेने की आवश्यकता होती है।

इस योजना को तीन चरणों में विकसित किया जाता है –– सबसे पहले, पूर्व बहु हितधारक परामर्श किया जाता है। अगर हम राज्य स्तर पर आपदा प्रबंधन योजना तैयार कर रहें हैं, तो हम सभी जिलों के व्यक्तियों को लेते हैं। जिला आपदा

प्रबंधन योजना बनाने के लिये कि इस योजना में क्या होगा, इसके उद्देश्य, समय काल क्या होगें, और हम किस प्रकार की रिपोर्ट की आशा करते हैं, हम उन सभी लाइन विभागों के लोगों से, जो नोड़ल (प्रधान) अधिकारी हैं, उनका सीधा विवरण मांगते हैं। इस योजना के चार खंड़ हैं, जिसके तहत डी डी एम पी सलाहकारों को विभिन्न कूटनीतियों पर काम करना चाहिये। इसके बाद, अंतिम बहु हितधारक परामर्श किया जाता है, जिसमें सभी जिला अधिकारियों, राज्य अधिकारियों, नागरिक समाज और एन जी ओस से उनकी जानकारी और इनपुट ली जाती है। केवल सरकार के साथ बातचीत से यह नहीं हो सकता, इसके लिये अन्य हितधारकों के साथ सहभागिता की आवश्यकता भी होती है।

सफर – *आपदा तैयारियों में, समुदायों के साथ काम करते समय आपको कौन से महत्वपूर्ण मुद्दों का सामना करना पड़ा? और आपने उन्हें किस प्रकार से काबू में किया ?*

ड़ॉ. हैन्ना –देखिये, मुझे लगता है कि कई जगाहों पर नीति बनाने वालों और सेवा प्रदान करने वालों में क्षमता विकसित करने की इच्छा होनी चाहिये। हमें अतिछादित (एक दूसरे को दबाने वाले) मुद्दों को प्राथमिकता के आधार पर रखने की आवश्यकता है, जैसे–लिंग, विकलांग जैसे कमजोर व्यक्तियों को शामिल करना, गर्भवली महिलायें, बच्चे, स्तनपान कराने वाली महिलायें, और आपदा के जोखिम को कम करने में विकलांगता का मुख्यधारा में समावेश। ये ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें कम प्राथमिकता दी जाती है, आपदा के समय इन पर विशेष ध्यान देना चाहिये। आकस्मिक योजनायें बनाने के द्वारा हम ऐसा कर सकते हैं। स्फीयर इंड़िया ने भारत के 10–12 राज्यों में एम आई एस पी नामक एक स्वास्थ्य मानक आरम्भ किया है, और स्वास्थ्य योजनाओं में एस आर एच सेवाओं को एकीकृत करने, और जिला स्तर पर आपदा के समय मातृ मृत्यु दर और एच आई वी–एच टी आई को रोकने के लिये आर एच किट के लिये संसाधन निर्धारित के लिये राज्य सरकार से अपने पक्ष की कठोर वकालत करी है। आपदा के समय स्फीयर न्यूनतम मानकों का अनुपालन करना एक और अतिमहत्वपूर्ण और आवश्यक कदम है, जिसे सभी मानवीय संस्थाओं और सरकारी एजेंसियों को कार्यन्वित करने की आवश्यकता है। स्फीयर न्यूनतम मानकों और उसके लागू किये जाने पर स्फीयर प्रशिक्षण देता है। घटना आदेश प्रणाली और समन्वय प्रणालियों को अच्छी तरह से पूर्व–आपदा होने की आवश्यकता है।

सफर – *आपदा तैयारियों में प्रमुख सरकारी पहल कौन सी है ? देश में आपदा तैयारियों के उद्देश्यों को प्राप्त करन में वे कितने प्रभावशाली हैं?*

ड़ॉ. हैन्ना – राज्य स्तर पर, राज्य आपदा प्रबंधन योजनायें उचित स्थिति में हैं, और आपदा प्रबंधन और आपातकालीन विभाग सहित संस्थायें भी विद्यमान हैं। हमारे पास अनेक सरकारी कार्यक्रम जैसे स्कूल सुरक्षा, सी बी डी आर एम आदि भी है। फिर भी हमें यह आंकलन करने की आवश्यकता है कि इन कार्यक्रमों का परिपालन एक समान है या नहीं। हमें सेवाओं में और अधिक निरन्तरता की आवश्यकता है, और हमें इन कार्यक्रमों को स्थानिक अधिकार देने की और इन्हें और अधिक सामुदायिक आधारित बनाने की आवश्यकता है। भारत के हर संवेदनशील स्थान पर हमें इन कार्यक्रमों को करना चाहिये। एक मजबूत आपदा जोखिम न्यूनीकरण प्रणाली बनाने के लिये राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एन जी ओस से सक्रिय रूप से सहायता मांग रहा है। हम आशा करते हैं कि सामुदायिक स्तर पर कुछ ठोस काम करने के लिये यह एक रास्ता तैयार करेगा।

सफर – *समुदायों को आपदाओं के लिये तैयार करने में एन जी ओस की आदर्श भूमिका और जिम्मेदारियां क्या हैं ?*

ड़ॉ. हैन्ना – देखिये, आपदा तैयारियों के लिये क्षमता निर्माण में एन जी ओस बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एन जी ओस को अपनी अच्छी प्रथाओं, और कार्यों को मुद्दे के आम कार्यवली के साथ साझा करना चाहिये, और राहत तथा बहाली की प्रतिक्रिया में तालमेल के साथ काम करना चाहिये। इसी प्रकार, कमजोर समुदाय से संबंधित मुद्दों के प्रति सामूहिक वकालत की आवश्यकता है। राज्य और जिला स्तर पर, सरकार और एन जी ओस के बीच प्रभावशाली समन्वय प्रणाली को सुनिश्चित करना चाहिये। संसाधनों को प्रभावशाली तरीके से व्यवस्थित करने से अच्छे परिणाम निकल सकते हैं। कुछ राज्यों में आपदा जोखिम न्युनीकरण और राहत तथा बहाली से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर सरकार के साथ हिमायत करना आवश्यक है।

आंकड़ों के रखरखाव में भी एन जीओस की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। संसाधनों का प्रतिचित्रण (पता लगाने) करने में और सरकार के साथ ज्ञान तथा जानकारी बांटने में, सरकार के प्रयासों को पूरा करने और सहायक होने में वे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ड़ॉ. हैन्ना, अपनी जानकारी और समय देने के लिये हम आपके बहुत आभारी हैं।

समुदाय आधारित तैयारी

(पुनीता कुमार, प्रोग्राम मैनेजर एड़वोकेसी)

इस लेख में, समुदाय आधारित तैयारियों के बारे में, मैं कुछ प्रश्नों पर चर्चा करूंगी, जैसे .... ''आपदा परमेश्वर का कार्य है। हमें इससे कौन बचा सकता है?''; ''ओह! हमारे साथ ऐसा कभी नहीं होगा''; ''हम इसके लिये कैसे तैयार हो सकते हैं, कौन इसके बारे में जानता है!'' या, ''हम बुरी चीजों की अपेक्षा नहीं करते, हमारे लिये कुछ भी बुरा नहीं हो सकता!!''

परन्तु सच्चाई यह है कि आपदा एक अप्रत्याशित घटना है, जो कहीं भी, किसी के साथ भी हो सकती है। हाल ही में शिमला में भारी बर्फवारी के कारण जीवन अस्त–वयस्त हो गया था जिसका असर बिजली आपूर्ति पर हुआ, बन्द कमरों में कोयले की अंगीठी के साथ सोये कुछ लोग भी मारे गये। आपदाओं की तस्वीरें और वीड़ियो हमसे सर्वशक्तिमान से ड़रने और धन दान करने की मांग करते हैं।

दान, धर्म, राजनीति, सामाजिक व्यवहार (देशपरिवर्तन), स्वास्थ्य, सब कुछ इससे प्रभावित हो जाता है। हम केवल प्रकृति के रुकने का इंतजार करते हैं, ताकि जीवनों को बचाने के लिये नीतियों को लागू करने पर काम करना आरम्भ कर सकें, भोजन और आवश्यक चीजों के साथ लोगों तक पहुंचने की अपनी कार्य योजना का परिपालन कर सकें, और आपदा तथा भयावह अनुभवों से निपट सकें। रिपोर्टों को जमा करने में, यह प्रमाणित करने में कि कितने लोगों या लाभार्थियों तक हम पहंचे हैं, और हमने उनकी कितनी मदद करी है, इन सब में हम इतना व्यस्त हो जाते हैं कि हम यह भूल जाते हैं कि अभी भी कुछ करने की आवश्यकता है –– इसके साथ जीना सीखने की।

मुझ याद है कि सन्ड़े स्कूल में हमने एक गाना सीखा था .... 'बुद्धिमान ने चट्टान पर बनाया अपना घर.....'

दोस्तों, परमेश्वर चाहता है कि हम समझदारी से काम करें और आपदाओं से लड़ने के लिये अपनी योजनायें बनाकर अपने आप को तैयार करें। आज की तकनीक के साथ कई चीजों के बारे में हमें बहुत बढ़िया जानकारी मिलती है: मौसम के बारे में पूर्वानुमान, भूकंप के रूप, आग के मौसम, आपदा प्रवृत क्षेत्र, आदि। पर फिर भी हम अपने आप को तैयार करने में असफल रहते हैं।

हमें याद रखना चाहिये कि जब हम आपदा प्रवृत्त क्षेत्रों के लिये योजना बनाते हैं या एक परियोजना का प्रस्ताव रखते हैं, तो हमें उसमें आपदा तैयारी की गतिविधियों को शामिल करने की आवश्यकता है, और हमें व्यवहार संबंधी परिवर्तन करने की कोशिश करनी चाहिये जो कुशलता और प्रभावशाली ढ़ंग से आपदाओं से निपटने में हमारी मदद करता है। आपदाओं और आपातकाल के लिये व्यक्तिगत, सामुदायिक, और संस्थात्मक स्तर पर तैयारी, आपदा के जोखिम को कम करने के लिये और उसके प्रभावों को सुधारने के लिये प्रभावशाली उपाय हो सकते हैं। तैयारी के प्रयास मानव व्यवहार को इस प्रकार से बदलने पर केंद्रित होते हैं जिनसे लोगों के जोखिम कम हों और संकट के परिणामों से निपटने की उनकी क्षमता बढ़े।

समुदाय आधारित तैयारियों में लोग, समुदाय, और संस्थायें (सरकारी और गैर सरकारी) शामिल हैं। जीवन की क्षति को कम करना एक सामूहिक प्रयास है। आपदा के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों के लिये आपदा तैयारी की नीतियों का होना, हिमायत करने का एक और सबसे अधिक महत्वपूर्ण पहलु है। टीमों को स्कूलों, अस्पतालों, समुदायों में हमेशा तैयारी की गतिविधियों पर काम करना चाहिये। आपदायें कुछ ही क्षणों में मानव जीवन को बदल देते हैं। तैयारी के साथ लड़ना हमारी जिम्मेदारी है, हमें उस व्यक्ति की तरह मूर्ख नहीं बनना चाहिये जिसने अपना घर बालू पर बनाया था। धन पर बातचीत (समझौता) की जा सकती है, पर उस जीवन पर नहीं जो परमेश्वर को जाने बिना ही समाप्त हो जाते हैं। मसीही होने के नाते, यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम ऐसा वातावरण बनायें, जिसमें हम हमेशा तैयार रहें।

सी एच डी पी समाचार

- 26 जनवरी 2017 को ''समुदाय आधारित मानसिक स्वास्थ्य का परिचय'' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस सत्र में ड़ॉ. कैरन मथायस ने सहायता करी थी।
- 23 से 27 जनवरी 2017 तक नवीनता, दिल्ली में सामुदायिक संगठन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस सत्र में श्री स्कॉट स्मिथ ने सहायता करी थी।
- 15 से 17 मार्च 2017 तक डॉन बास्को स्कूल, दिल्ली में आपदा राहत प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया था।

आने वाले कार्यक्रम

सी एच डी पी की वार्षिक रिर्पोटिंग सभा

दिनांकः 21 से 25 अप्रैल, 2017

स्थानः सी आर एस सी, देहरादून

सफ़र का अगला अंक

सफ़र का अंक–25, सी एच ड़ी पी के **40 वर्षों का समारोह (उत्सव)** पर केंद्रित होगा

सम्पादक – फैबा जेकब
सह सम्पादक – कैरन मथायस
लेआउट और ग्रैफिक – सुआनलियान तंगपु
प्रूफरीडिंग – जेन माउन्टीयर
अनुवादक – रेनूका मिल्टन

एच आर गतिविधियां

हेमलता

नियुक्तियां

सुश्री कुलदीप कौर	प्रौजेक्ट ऑफिसर	सी एच ड़ी पी, ललितपुर
श्री राकेश प्रसादसु	कम्यूनिटी कोऑर्डनैटर	करुणा, डन्कन
श्री केनीसेनु मेहता	प्रौजेक्ट ऑफिसर	सहयोग प्रौजेक्ट
श्री शेरन सरमन हंसी	प्रौजेक्ट ऑफिसर	सी एच डी पी, तेजपुर
श्री विक्की कुमार	ड्राइवर	नई रोशनी, डन्कन

Click to download this issue in .pdf

हमसे सम्पर्क के लिए
808/92, दीपाली बिल्डींग,
नेहरू प्लेस, नई दिल्ली–110019
फोन न.: 011–3088–2008 और 3088–2009
वेब: www.eha-health.org